International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to Higher Education For all Subject

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

July , 2024

Vol-1, ISSUE-VII

IMPACT FACTOR- 6.115 (SJIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

EDITORIAL BOARD

Patron

Prof. Kala Nath Shastri

(Rashtrapati Puraskar" For His Contribution To Sanskrit)

Prof. Dr. Alireza Heidari

Full Professor And Academic Tenure, USA

Chief Editor

Dr. Krishan Bir Singh

International Advisory Board

Aaeid M. S. Ayoub

Geotechnical Environmental Engineering

Uqbah bin Muhammad Iqbal

Postgraduate Researcher

Badreldin Mohamed Ahmed Abdulrahman

Associate Professor

Dr. Alexander N. LUKIN

Principal Research Scientist & Executive Director

Dr. U. C. Shukla

Chief Librarian and Assistant Professor

Dr. Abd El-Aleem Saad Soliman Desoky

Professor Assistant

Prof. Ubaldo Comite

Lecturer

Moustafa Mohamed Sabry Bakry

Dr Sajid Mahmood

Shameemul Haque

Associate Chief Editor

Ravindrajeet Kaur Arora

S. Bal Murgan

Dr. Sandeep Nadkarni

Dr. A Karnan

Dr. S.R. Boselin Prabhu

Deepika Vodnala

Dr. Kshitij Shinghal

Christo Ananth

Gopinath Palai

Dr. Neeta Gupta

Dr. Vinita Shukla

Harold Jan R. Terano

Dr Sajid Mahmood

Dr Pavan Mishra

Editor

Dr.H.B.Rathod

Dr. Dharamender Singh Chauhan,UOR,Jaipur

Dr.Govind Nath Chaudhary-Sanskrit- Bhagalpur

Dr.Naveen Gautam

Dr. Mohini Mehrotra

Dr. Arvind Vikram Singh

Dr. Suresh Singh Rathore

Dr.Kishori Bhagat

Dr.Murari Lal Dayma

Kamalnayan. B. Parmar

Dr.Deepak Sharma

Dr.Sanjay B Gore

Dr. A.karnan

Dr.Amita Verma

Dr . Ity Patni

Dr. Somya Choubey

Dr.Surinder Singh

Dr. Manoj S. Shekhawat,

Dr. Anshul Sharma

Dr. Ramesh Kumar Tandan

S N Joshi

Dr. Sant Ram Vaish

Bindu Chauhan

Dr. Vinod Sen

Dr. Sushila Kumari

Dr Indrani Singh Rai

Dr Abhishek Tiwari

Prof.S.K.Meena

Prof.Praveen Goswami

G Raghavendra Prasad

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

International Level Double Blind Peer Reviewed,Refereed,Indexed Research Journal,ISSN(Print)-0974-2832,E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009-29954,
Impact Factor-6.115(SJIF),July-2024,VOL-LISSUE-7

Research Paper - Hindi

फिल्म 'लापता लेडीज' और अरुण प्रकाश की 'प्रतिनिधि कहानियाँ' संग्रह में स्त्री – अस्तित्व की अभिव्यक्ति के आयाम

डॉ चन्द्रमोहन सिंह रावत

सह – आचार्य, हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, दि० वि० वि०, धौला कुँआ, बेनितो जुआरेज मार्ग, दिल्ली–110021

सार : लैंगिक भेदभाव के विरोध और स्त्री की पहचान को समर्पित 'लापता लेडीज' फिल्म में एक ओर गाँव की कम शिक्षित लड़की है जो विवाह के लिए सहज प्रस्तुत है तो दूसरी ओर अन्य स्त्री है जो शिक्षा में अव्वल है, जीवन में समाज के लिए कुछ करना चाहती है; जैविक खेती में रुचि है परंतु विवाह उसकी प्राथमिकता में नहीं है । फिर उनका अपना संघर्ष और उस सब के माध्यम से समाज के लिए संदेश है; पुरानी सोच के लोगों को जागरूक करने की पहल है। फिल्म में प्यार की सहज अनुभूति भी अनुस्यूत है; फिल्म विवाह के सच्चे स्वरूप की मूल सोच पूर्ण समर्पण और निःस्वार्थ आसक्ति के मसाले से गुंथी है । अरुण प्रकाश की चुनी हुई कतिपय कहानियाँ भी समाज की उन स्थितियों को चित्रित करती हैं जो संघर्ष में जीती स्त्री की तड़प, व्याकुलता और विकटता को सम्मुख रखती हैं। बच्चे वाली कामकाजी विधवा स्त्री, कठिनाई से नौकरी पाई नवयुवती आदिवासी स्त्री और मामा के आश्रय में रह रही अनाथ बालिका के आगे बढ़ने के साहस के उन छवि चित्रों के पीछे एक ही प्रेरणा है कि स्त्री को इंसान मानना है, उसे देवी के पद की दरकार नहीं है । प्रथम उसे इस भू – भाग में अपना स्थान चाहिए । उस की प्रतिष्ठा उसके अपने होने और हाड माँस की जैविक शरीरधारी होने के रूप में हो। वह त्याग – बलिदान और सर्वस्व लुटाने की ही भूमिका निभाने हेतु पैदा नहीं हुई ; उसके हृदय में भी मानवीय भाव, इच्छाएँ और लालसाएँ हैं । स्त्री किसी से बराबरी मात्र नहीं वरन प्रकृति – प्रदत्त अपने मानव सुलभ भावों, शक्तियों और दशाओं का उन्मुक्त प्रदर्शन करने का अपना नैसर्गिक स्थान चाहती है। वह बेड़ियों में नहीं खुली हवा में अपने हृदय की धड़कनों के स्पंदन को सुनना चाहती है ।

बीज – शब्द : सिनेमा, स्त्री, संघर्ष, अस्तित्व, शोषण, निर्णय, समाज ।

आलेख – आमिर खान प्रॉडक्शन से निकली 'लापता लेडीज'[1] फिल्म किरण राव द्वारा निर्देशित है और कथा के लेखक बिप्लव गोस्वामी हैं। फिल्म में एक ऐसी प्रथा को केन्द्र में रखा है जो भारतीय समाज विशेषतः उत्तरी भारत क्षेत्र में बहुत ही स्वाभाविक है – विवाह के उपरांत घूँघट अर्थात् सिर पर साड़ी का पल्लू ऐसे लेना कि मुँह ढँका रहे। फिल्म के सभी कलाकार नये हैं। चरित्रों की संख्या सीमित ही है पर कथा के अनुकूल है । फिल्म में दरोगा का चरित्र रोचक और फिल्म में महत्त्वपूर्ण कौतूहल का केन्द्र है । फिल्म के प्रथम उद्घाटन दृश्य में नायक दीपक की शादी फूलकुमारी से हो रही है। शादी और संपूर्ण फिल्म की पृष्ठभूमि ग्रामीण है, सभी पात्र भारतीय ग्रामीण परिवेश को प्रस्तुत और मुखरित कर रहे हैं। नायक की विदाई शादी के दो दिन बाद होती है और गाँव से रेलवे स्टेशन काफी दूर है तरह – तरह के साधनों(स्कूटर, नाव और बस) से होते हुए एक ऐसे स्टेशन से नायक – नायिका को रेल में बैठाया जाता है जिसका न तो प्लेट फार्म है और न ही उसका नाम दिखाया है(ऐसा होना कहानी की माँग थी) । रेल के डिब्बे में भीड़ तो है ही परंतु दो–तीन नव–विवाहित जोड़े और भी विद्यमान हैं ।